एम.एच.डी.

एम. ए. हिंदी कार्यक्रम

द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2017 और जनवरी 2018 सत्रों के लिए)

अनिवार्य पाठ्यक्रम

एम.एच़.डी.–1 : हिंदी काव्य–1
एम.एच.डी–5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी–7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

मॉड्यूल '1' – कहानी : विशेष अध्ययन

एम.एच.डी-09 : कहानी : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी–10 : प्रेमचंद की कहानियां
एम.एच.डी–11 : हिंदी कहानी
एम.एच.डी–12 : भारतीय कहानी

मॉड्यूल '2' – उपन्यास : विशेष अध्ययन

एम.एच.डी-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी–14 : हिंदी उपन्यास–1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी–15 : हिंदी उपन्यास–2
एम.एच.डी–16 : भारतीय उपन्यास

मॉड्यूल '3' – दलित साहित्यः विशेष अध्ययन

एम.एच.डी–17 : भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य
एम.एच.डी–18 : दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
एम.एच.डी–19 : हिंदी दलित साहित्य का विकास
एम.एच.डी–20 : भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

एम.ए. हिंदी कार्यक्रम (द्वितीय वर्ष)
सत्रीय कार्य 2017-18

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें निम्नलिखित पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं :

अनिवार्य पाठ्यक्रम

एम.एच़.डी.–1 : हिंदी काव्य –1
एम.एच.डी–5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी–7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

मॉड्यूल '1' – उपन्यास : विशेष अध्ययन
एम.एच.डी–09 : कहानी : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी–10 : प्रेमचंद की कहानियां
एम.एच.डी–11 : हिंदी कहानी
एम.एच.डी–12 : भारतीय कहानी

मॉड्यूल '2' – उपन्यास : विशेष अध्ययन
एम.एच.डी–13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी–14 : हिंदी उपन्यास–1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी– 15 : हिंदी उपन्यास–2
एम.एच.डी– 16 : भारतीय उपन्यास

मॉड्यूल '3' – दलित साहित्यः विशेष अध्ययन
एम.एच.डी–17 : भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य
एम.एच.डी–18 : दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
एम.एच.डी–19 : हिंदी दलित साहित्य का विकास
एम.एच.डी–20 : भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

एम.एच.डी.-5 पाठ्यक्रम 8 क्रेडिट का है। शेष सभी पाठ्यक्रम 4–4 क्रेडिट के हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए है। प्रत्येक सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे। विद्यार्थियों को सभी अनिवार्य पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य करने होंगे। लेकिन वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के मॉड्यूल '1' और '2' अथवा मॉड्यूल '3' में से किसी एक मॉड्यूल के सभी पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य करने होंगे। आप उसी मॉड्यूल के पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य करें जिस मॉड्यूल का आपने चयन किया है और जिसकी पाठ्य सामग्री आपको प्राप्त हुई है।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए 'विवेचना' नाम से आलोचनात्मक आलेखों के संग्रह भेजे गए हैं। एमएचडी–1 में 'विविधा' नाम पुस्तक भी भेजी गई है। साथ ही एम.एच.डी.–17 से 20 तक चार 'विविधा' और एक 'विवेचना' नामक पुस्तक भी भेजी गई है।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा के सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें। बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपका अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर-पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर-पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए, जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

	अनुक्रमांक :.....
	नाम : .....
	पता : .....
पाठ्यक्रम शीर्षक :.....	.....
सत्रीय कार्य कोड :	.....
अध्ययन केंद्र का नाम/कोड :	दिनांकः .....

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।
5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
6. अपनी लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के समन्वयक (coordinator) के पास **जुलाई, 2017 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **31 मार्च 2018** और **जनवरी, 2018 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **30 सितम्बर, 2018** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें:

1. आपकी सत्रांत परीक्षा तीन घंटे की होगी और प्रत्येक सत्रीय कार्य भी तीन घंटे में किए जा सकने की दृष्टि से तैयार किए गए हैं। इसलिए सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हुए इस बात का ध्यान रखें कि सभी प्रश्नों के उत्तर तीन घंटे में लिखे जा सकें।
2. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें।
3. व्याख्या से संबंधित अंशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा–शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।
4. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

एम.एच.डी–1
हिंदी काव्य–1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी–1/टी.एम.ए/2017–18
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित प्रत्येक काव्यांश की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10x4=40

क) मोकों कहाँ ढूढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहों, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।

ख) सोभित कर नवनीत लिए ।
घुटुरूनि चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए ।।
चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिए।
लट लटकनि मनु मत्त मधुप गन मादक मधुहिं पिए।।
कठुला कंठ बज्र केहरि नख राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एको पल इहिं सुख का सत कल्प जिए।।

ग) खरभरू देखि बिकल पुर नारीं। सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं।।
तेहिं अवसर सुनि सिव धनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा।।
देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जनु लवा लुकाने।।
गौरि सरीर भूति भल भाजा। भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा।।
सीस जटा ससिबदनु सुहावा। रिसबस कछुक अरुण होड़ आवा।।
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते। सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते।।
बृषभ कंध उर बाहु बिसाला। चारू जनेउ माल मृगछाला।।
कटि मुनिबसन तून हुह बाँधे। धनु सर कर कुठारू कल काँधें।।

घ) कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलित कमीन किलकंत है।
कहै पद्माकर परागन में पौनहू में,
पातन में पिक में पलासन पगंत है।
द्वारे में दिसान में दुनी में देस देसन में,
देखौ दीपदी पन में दीपत दिगंत है।
बीथिन में बज्र नवेलिन में बेलिन में,
बनन में बागन में बगर्‌यो बसंत है।

2. निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : 15x3=45

क) पृथ्वीराज रासो की काव्यगत विशेषताएँ बताइए।
ख) कवि के रूप में कबीर का मूल्यांकन कीजिए।
ग) सूर द्वारा वर्णित वात्सल्य का सोदाहरण परिचय दीजिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों दीजिए : 5x3=15

क) घनानंद के काव्य कौशल पर विचार कीजिए।
ख) पद्मावत में लोकजीवन के चित्रण पर प्रकाश डालिए।
ग) मुक्तक कवि के रूप में बिहारी की विशेषताएँ बताइए।

एम.एच.डी.–5
साहित्य सिद्धांत और समालोचना
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–5
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–5/टी.एम.ए./2017–2018
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. काव्य हेतु पर विचार कीजिए। 10

2. 'शब्द शक्ति' से आप क्या समझते/समझती हैं ? सोदाहरण उत्तर दीजिए। 10

3. ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाओं पर विचार कीजिए। 10

4. रस की परिभाषा देते हुए रस निष्पत्ति संबंधी चिंतन पर प्रकाश डालिए। 10

6. अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत को स्पष्ट कीजिए। 10

7. लांजाइनस के प्रमुख आलोचना सिद्धांतों पर प्रकाश डालिए। 10

8. टी. एस. इलियट की परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा संबंधी अवधारणा की चर्चा कीजिए। 10

9. हिंदी आलोचना में डॉ. रामविलास शर्मा के योगदान को रेखांकित कीजिए। 10

10. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5×4=20

    (क) मनोविश्लेषणवादी आलोचना
    (ख) उत्तर आधुनिकतावाद
    (ग) संरचनावादी समीक्षा पद्धति
    (घ) प्रतीकवाद

एम. एच. डी.–7

हिन्दी भाषा और भाषाविज्ञान
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–7
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–7/टी.एम.ए./2017–2018
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 1000–1000 शब्दों में दीजिए। **5x4=60**

(1) क्रिया की संकल्पना पर विचार कीजिए।

(2) हिंदी की खंडेतर ध्वनियों का विवेचन कीजिए।

(3) अर्थ की प्रकृति और प्रक्रिया को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(4) भाषा विज्ञान और अनुवाद के अंतः संबंधों पर प्रकाश डाालिए

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए। **10x3=30**

(1) ध्वनि विवेचन

(2) वाक्यात्मक युक्तियाँ

(3) शैली विज्ञान क्या है?

(ग) निम्नलिखित पर लगभग 250–250 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए। **10x2=10**

(1) भाषा और सामाजिक संदर्भ

(2) प्रोक्ति की संकल्पना

मॉड्यूल '1' – कहानी : विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी. : 9 से 12 तक)

एम.एच.डी.–09
कहानी; स्वरूप और विकास
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–09
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–09/टी.एम.ए./2017–2018
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 15×4=60

1. कथा की लिखित परंपरा पर प्रकाश डालिए।

2. कहानी की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

3. नवजागरण कालीन भारतीय कहानी पर प्रकाश डालिए।

4. कहानी में अस्तित्ववाद की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

5. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 10×4=40

   (क) जर्मनी में कहानी

   (ख) पश्चिमी एशिया में कहानी

   (ग) जयशंकर प्रसाद और हिंदी कहानी

   (घ) नई कहानी

एम.एच.डी.–10
प्रेमचंद की कहानियाँ
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–10
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–10/टी.एम.ए./2017–2018
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10x2=20

(क) आज चालीस वर्षों से घर के प्रत्येक मामले में फूलमती की बात सर्वमान्य थी। उसने सौ कहा तो सौ खर्च किये गये, एक कहा तो एक! किसी ने मीन–मेख न की। यहाँ तक कि पं. अयोध्यानाथ भी उसकी इच्छा के विरूद्ध कुछ न करते थे; पर आज उसकी आँखों के सामने प्रत्यक्ष रूप से उसके हुक्म की उपेक्षा की जा रही है! इसे वह क्योंकर स्वीकार कर सकती!

(ख) रूपमणि ने आज तक इस मन्दबुद्धि युवक पर दया की थी। इस समय उसकी श्रद्धा का पात्र बन गया। त्याग में इस हृदय को खींचने की जो शक्ति है, उसने रूपमणि को इतने वेग से खींचा कि परिस्थितियों का अन्तर मिट–सा गया। विशम्भर में जितने दोष थे, वे सभी अलंकार बन–बनकर चमक उठे। उसके हृदय की विशालता में वह किसी पक्षी की भांति उड़–उड़कर आश्रय खोजने लगी।

2. प्रेमचंद की कहानियों में चित्रित स्वाधीनता आंदोलन पर प्रकाश डालिए। 16

3. प्रेमचंद की कहानियों में अभिव्यक्त जाति उन्मूलन की अवधारणा का विवेचन कीजिए। 16

4. 'बूढ़ी काकी' कहानी के आधार पर प्रेमचंद की स्त्री विषयक दृष्टि को स्पष्ट कीजिए। 16

5. प्रेमचंद की कहानी कला के मूल तत्वों को संक्षेप में समझाइए। 16

6. 'सुजान भगत' कहानी की शिल्पगत विशिष्टताओं पर विचार कीजिए । 16

एम. एच. डी.–11
हिन्दी कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–11
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–11/टी.एम.ए./2017–2018
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10x2=20

(क) वह चीफ़ के कमरे से निकलकर अपने काम पर लौटा तो मिस्त्री पास बिठाकर समझाने लगा, ''इस दुनिया में सबसे मेल–जोल रखकर चलना पड़ता है। नदी किनारे घास पानी के साथ थोड़ा झुक लेती है और फिर उठ खड़ी होती है, लेकिन बड़े–बड़े पेड़ धार के सामने अड़ते हैं और टूट जाते हैं। साहब ने तुम्हारी बदली कास्टिक टैंक पर कर दी है। बड़ा सख्त काम है, अब भी साहब को खुश कर सका तो बदली रूक सकती है।''

(ख) एक पेड़ के नीचे खड़े होकर हम दोनों बात करते हुए नीचे एक पत्थर पर बैठ गये। उसने कहा, ''देखा नहीं! ब्रिटिश–अमरीकी या फ्रान्सीसी कविता में जो मूड्स जो मनःस्थितियाँ रहती हैं– बस वे ही हमारे यहाँ भी हैं, लायी जाती हैं। सुरूचि और आधुनिक भावबोध का तकाजा है कि उन्हें लाया जाये। क्यों? इसलिए कि वहाँ औद्योगिक सभ्यता है, हमारे यहाँ भी। मानों कि कल–कारखाने खोले जाने से आदर्श और कर्त्तव्य बदल जाते हों।''

2. 'तीसरी कसम' कहानी के आधार पर नई कहानी की ग्राम संवेदना को स्पष्ट कीजिए। 16

3. 'डिप्टी कलक्टरी' कहानी की कथावस्तु का विश्लेषण कीजिए। 16

4. शानी की कहानियों के महत्वपूर्ण बिंदुओं की पड़ताल कीजिए। 16

5. प्रेमचंद के गाँव और मार्कण्डेय के गाँव का अंतर स्पष्ट कीजिए। 16

6. 'ज्ञानरंजन की कहानी 'बर्हिगमन' की अंतर्वस्तु को स्पष्ट कीजिए। 16

एम. एच. डी.–12

भारतीय कहानी

सत्रीय कार्य

(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–12
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–12/टी.एम.ए./2017–2018
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः 10x2=20

क) कुछ दिन पहले पूर्णिमा की एक रात राव साहब और उनकी पत्नी चाँदनी में सैर के लिए निकले थे। ऐसे समय काम से लौटता हुआ अम्माजी का बाप उनके सामने पड़ गया। इतना बड़ा आदमी अब क्या पहचानेगा! यह सोचता हुआ वह सिर झुकाकर आगे बढ़ने लगा। लेकिन राव साहब ने ही उसे पुकारा। वह भी नाम लेकर! अम्माजी का बापू फूल उठा था। उस पूरी रात घर में उन्हीं लोगों को लेकर बातें होती रहीं। उसके अगले ही दिन अम्माजी को ले जाकर उसने परिचय कराया था।

ख) अपने होठों पर पवित्र मुस्कराहट छितराते कबीर झटपट उठ खड़ा हुआ। हैरत–भरी निगाहों से लोगों के चेहरे पर बारी–बारी से देख रहा था कि ठाकुर झुँझलाहट दरसाते कहने लगा, ''बावले की तरह टग–भग क्या देख रहा है? तेरे अहोभाग्य कि देश के मालिक, तीन लोक के नाथ खुद तेरे घर पधारे हैं, तेरी कारीगरी देखने की खातिर। अब उल्लू की तरह आँखें क्या फाड़ रहा है? कालीन या शॉल हो तो नजर कर।''

2. मलयालम कहानी के विकास में एम.टी. वासुदेवन नायर की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 16

3. 'ट्रेडिल' कहानी के आधार पर छापाखाने के जीवन और वातावरण का वर्णन कीजिए। 16

4. 'अपने लिए शोकगीत' कहानी के प्रमुख चरित्रों पर प्रकाश डालिए। 16

5. ओड़िया कहानी में चित्रित आदिवासी जीवन पर प्रकाश डालते हुए गोपीनाथ मंहति की कहानियों में आए आदिवासी जीवन का मूल्यांकन कीजिए। 16

6. 'पाँच पत्र' कहानी में अभिव्यक्त जीवन दर्शन का विश्लेषण कीजिए। 16

मॉड्यूल '2' – उपन्यास : विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.–13 से 16 तक)

एम.एच.डी.–13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–13
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–13/टीएमए/2017–18
कुल अंक : 100

नोटः निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. हिन्दी उपन्यास में किसान–चेतना और स्त्री–चेतना के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालिए। 15

2. उपन्यास की भाषिक संरचना और शिल्पगत विशेषताओं का सोदाहरण परिचय दीजिए। 15

3. हिन्दी उपन्यास–रचना में स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य के प्रभाव को स्पष्ट कीजिए। 15

4. भारतीय उपन्यास में जातीय चेतना की अभिव्यक्ति का विवेचन कीजिए। 15

5. यथार्थवाद की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए 19वीं सदी के यूरोपीय उपन्यासों का परिचय दीजिए। 15

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5x5=25
   (क) फ्रेंच उपन्यास परंपरा
   (ख) नवजागरण और बांग्ला उपन्यास
   (ग) उपन्यास की आलोचना
   (घ) उपन्यास और महाकाव्य
   (ङ) कृषि जीवन और भारतीय उपन्यास

एम.एच.डी.–14
हिन्दी उपन्यास–1
(प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी. – 14
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–14/टीएमए/2017–2018
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :** **10x4= 40**

(क) तुमने जो कुछ कहा, वही मैं स्वप्न में देख रहा था और तुम्हें सेवाधर्म का उपदेश कर रहा था। सुमन, तुम मुझे भलीभांति जानती हो, तुमने मेरे हाथों बहुत दुःख उठाए हैं, बहुत कष्ट सहे हैं। तुम जानती हो, मैं कितनी नीच प्रकृति का अधम जीव हूँ, लेकिन अपनी उन नीचताओं का स्मरण करता हूँ, तो मेरा हृदय व्याकुल हो जाता है। तुम आदर के योग्य थीं, मैंने तुम्हारा निरादर किया। यह हमारी दुरवस्था का, हमारे दुःखों का मूल कारण है। ईश्वर वह दिन कब लायेगा कि हमारी जाति में स्त्रियों का आदर होगा। स्त्री मैले–कुचैले, फटे–पुराने वस्त्र पहनकर आभूषणविहीन होकर, आधे पेट सूखी रोटी खाकर, झोपड़े में रहकर, मेहनत–मजदूरी कर, सब कष्टों को सहते हुए आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकती है।

(ख) क्षण मात्र में ज्ञानशंकर के विचारों ने पलटा खाया। जब तक उन्हें शंका थी कि राय साहब दम तोड़ रहे हैं तब तक वह उनकी प्राण–रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे। जब बाहर खड़े–खड़े निश्चय हो गया कि राय साहब के प्राणान्त हो गये तब वह अपनी जान की खैर मनाने लगे। अब उन्हें सामने देखकर क्रोध आ रहा था कि यह मर क्यों न गये! इतना तिरस्कार, इतना मानसिक कष्ट व्यर्थ सहना पड़ा! उनकी दशा इस समय उस थके–माँद हलवाहे की–सी हो रही थी जिसके बैल खेत से द्वार पर आकर बिदक गये हों, दिन–भर के कठिन परिश्रम के बाद सारी रात अन्धेरे में बैलों के पीछे दौड़ने की सम्भावना उसकी हिम्मत को तोड़े डालती हो।

(ग) हमारा साम्राज्य तभी तक अजेय रह सकता है, जब तक प्रजा पर हमारा आतंक छाया रहे, जब तक वह हमें अपना हितचिंतक, अपना रक्षक अपना आश्रय समझती रहे, जब तक हमारे न्याय पर उसका अटल विश्वास हो। जिस दिन प्रजा के दिल से हमारे प्रति विश्वास उठ जाएगा, उसी दिन हमारे साम्राज्य का अंत हो जाएगा। अगर साम्राज्य को रखना ही हमारे जीवन का उद्देश्य है तो व्यक्तिगत भावों और विचारों का यहाँ कोई महत्व नहीं।

(घ) मानव–जीवन की सबसे महान् घटना कितनी शांति के साथ घटित हो जाती है। वह विश्व का एक महान् अंग, वह महत्वाकांक्षाओं का प्रचंड सागर, वह उद्योग का अनंत भंडार, वह प्रेम और द्वेष, सुख और दुःख का लीला–क्षेत्र, वह बुद्धि और बल की रंगभूमि न जाने कब और कहां लीन हो जाती है, किसी को खबर नहीं होती। एक हिचकी भी नहीं, एक उच्छ्वास भी नहीं, एक आह भी नहीं निकलती! सागर की हिलोरों का कहाँ अंत होता है, कौन बता सकता है। ध्वनि कहां वायु–मग्न हो जाती है, कौन जानता है। मानवीय जीवन उस हिलोर के सिवा, उस ध्वनि के सिवा और क्या है।

2. प्रेमचंद की साहित्यिक मान्यताओं पर प्रकाश डालिए। 10

3. प्रेमशंकर और ज्ञानशंकर की चारित्रिक विशेषताओं की तुलना कीजिए। 10

4. 'रंगभूमि' पर स्वाधीनता आंदोलन के प्रभाव का आकलन कीजिए। 10

5. गबन के औपन्यासिक शिल्प पर विचार कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5x4=20
   (क) प्रेमाश्रम में चित्रित ज़मींदार
   (ख) 'सेवासदन' का वस्तु–संगठन
   (ग) प्रेमचंद के उपन्यास
   (घ) 'रंगभूमि' की भाषा

एम.एच.डी.–15
हिन्दी उपन्यास–2
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी. – 15
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–15/टीएमए/2017–2018
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10x4= 40

(क) औचित्य की कोई धारणा शाश्वत नहीं। मनुष्य कर्म का फल अवश्य पाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम जिन कर्मों को जानते नहीं उनके फल से नियंत्रित हैं बल्कि यह कि हम अपने प्रयत्न और कर्म से स्वयं को, समाज को जैसा बनाने का प्रयत्न करते हैं, हमारा जीवन उसी के अनुसार बन जाता है। जीवन में प्रयत्न का समय कभी समाप्त नहीं होता। ..... सुकर्म–कुकर्म की कसौटी ज्ञान और भावना है। ..... कार्य और कर्म तो क्षण में समाप्त हो जाते हैं। वे मनुष्य को नहीं बाँध सकते। भावना और ज्ञान बहुत समय तक बने रहते हैं। उनसे एक के बाद दूसरे कार्य और कर्म होते रहते हैं, ज्ञान और भावना ही मुख्य हैं।

(ख) 'काशीराम, तुम निर्लेप फकीर हो। मैं दुनियादार। तुम्हारी दया–रहमवाली वृत्ति को क्यों बदलूँ! सौ–पचास पर लकीर मार भी दोगे तो उसके भंडारे में कमी न आएगी। फिर शास्त्र मर्यादा कहती है–दान से आता है, जाता नहीं।

काशीशाह गंभीर हो गए–''भ्राजी, दिन में एक बार सुक्खमनी का पाठ जरूर कर लिया करें। इस छन–भंगुर जगत में नाम ही कमाई है। माया दमड़े नहीं।''

शाह जी कहीं और विचरने लगे– ''बड़े चाचा जी का कहना याद करता हूँ तो समझ–बूझ दिमाग की निथर जाती है। कहा करते थे–सिर्फ इकोतर सौ लेकर इस ग्राँ में आन बसे थे हमारे पुरखे। जो छुआ सोना बनता गया! अब दुनिया आख्यान करती है–लोगों का तेल नहीं जलता, शाहों का मूत्र जलता है।''

(ग) हाँ, लेकिन जो इस नैतिक विकृति से अपने को अलग रखकर भी इस तमाम व्यवस्था के विरुद्ध नहीं लड़ते, उनकी मर्यादाशीलता सिर्फ़ परिष्कृत कायरता होती है। संस्कारों का अन्धानुसरण! और ऐसे लोग भले आदमी कहलाये जाते हैं, उनकी तारीफ भी होती है, पर उनकी जिन्दगी बेहद करुण और भयानक हो जाती है और सबसे बड़ा दुःख यह है कि वे भी अपने जीवन का यह पहलू नहीं समझते और बैल की तरह चक्कर लगाते चले जाते हैं।

(घ) यह सही है कि 'सत्य' 'अस्तित्व' आदि शब्दों के आते ही हमारा कथाकार चिल्ला उठता है, ''सुनो भाइयो–यह किस्सा–कहानी रोककर मैं थोड़ी देर के लिए तुमको फिलासफी पढ़ाता हूँ, ताकि तुम्हें यकीन हो जाय कि वास्तव में मैं फिलासफर था, पर बचपन के कुसंग के कारण यह उपन्यास (या कविता) लिख रहा हूँ। इसलिए हे भाइयो, लो, यह सोलह–पेजी फिलासफी का लटका और अगर मेरी किताब पढ़ते–पढ़ते तुम्हें भ्रम हो गया कि मुझे औरों–जैसी फिलासफी नहीं आती, तो उस भ्रम को इस भ्रम से काट दो।

2. यशपाल के अन्य उपन्यासों की तुलना में 'झूठा सच' क्यों विशिष्ट और महत्वपूर्ण है? विश्लेषण कीजिए। 10

3. 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास की अंतर्वस्तु के विशेष घटकों पर विचार कीजिए। 10

4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के भाषिक शिल्प की विशेषताएँ बताइए। 10

5. 'राग दरबारी' के संरचना शिल्प पर विचार कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5x4=20

(क) विभाजन संबंधी अन्य उपन्यास और 'झूठा सच'

(ख) शाहजी का चरित्र

(ग) 'सूरज का सांतवाँ घोड़ा' का कथानक

(घ) 'राग दरबारी' में निहित व्यंग्य

एम.एच.डी.–16
भारतीय उपन्यास
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–16
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–16/टी.एम.ए./2017–2018
कुल अंक : 100

क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 800–1000 शब्दों में लिखिए : 15×4=60

1. तकषि शिवशंकर पिल्लै के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन कीजिए।
2. 'संस्कार' के केन्द्रीय चरित्र का विश्लेषण कीजिए।
3. 'बिरसा मुंडा' का चरित्र–चित्रण कीजिए।
4. 'मानवीनी भवाई' में निरूपित ग्राम्य जीवन की समीक्षा कीजिए।

ख) निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 10×4=40

(क) यू. आर अनंतमूर्ति
(ख) कालू का चरित्र
(ग) प्राणेशाचार्य
(घ) मुण्डा विद्रोह
(ड.) मलयालम में उपन्यास लेखन की परंपरा

मॉड्यूल '3'– दलित साहित्य : विशेष अध्ययन

(एम.एच.डी.–17 से 20 तक)

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–17

'भारत की चिंतन परंपराएं और दलित साहित्य'

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–17
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी.–17/टी.एम. ए/ 2017– 2018
कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X4=40

क) ''इत्येशा व्युपषान्तये न रतये मोक्षार्थगर्भाकतिः,
श्रोवणां ग्रहणार्थमन्यमनसां काव्योपचाशत् कृता।
यन्मोक्षात्कृतमन्यदव हि मया तत्काव्यधर्मात् कृतम्
पतुं तिक्तभिवौषधं मधुयुतं ह्द्यं कथं स्यादिति।।''

ख) ऊँचा–ऊँचा पाबत तहिं वसइ सबरी बाली।
मोरड्गी पिच्छि पहिरहि सबरी गीवत गुजरी माला।
उमत सबरो पागल सबरों, माकर गुली–गुहाड़ा।
तोहारि णिअ धरिणी सहज सुन्दरी।।
पाणा तरूवर मौलिल रे, गअणत लागेलि डाली।
एकली सबरी ए वनहिण्डइ, कर्ण कुण्डल वज्रधारी।.....

ग) चारि वेद पढ़ाई करि, हरि सू लाया हेत।
बलि कबीरा ले गया, पंडित ढूढ़े खेत।।

घ) मैं पहनती, ओढ़ती, श्रृंगार करती हूँ, पूजनीय के लिए
कृति मेरी पूजनीय के लिए, दृष्टि मेरी पूजनीय के लिए,
अंतरंग, बहिरंग लिंग के लिए
अंतः कर्म करने पर भी कर्म से अलिप्त हूँ मैं।
चेत्र मल्लिकार्जुन में सामरस्य होने से
दस में ग्यारह होने का मैं दावा कर सकती हूँ।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : 10X4=40

क) अश्वधोष की महत्त्वपूर्ण कृतियों के बारे में बताइए।
ख) बौद्ध धर्म के उदय एवं विकास की समीक्षा कीजिए।
ग) प्रमाण सिद्धांत को अपने शब्दों में व्याख्यायित कीजिए।
घ) 'मिलिन्द प्रश्न' पुस्तक में वर्णित विषय के बारे में बताइए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिएः 10X2=20

क) आर्य वसुबंधु के रचनात्मक योगदान पर अपना मत लिखे।
ख) महानुभाव पंथ के उदय एवं विकास पर विचार कीजिए।
ग) नागसेन के तर्को पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
घ) हरिदास साहित्य के महत्त्व के बारे में बताइए।

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–18
(दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप)
(सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–18
सत्रीय कार्य कोड एम.एच.डी.–18/टी एम ए/2017–18
कुल अंक 100

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 'दस' प्रश्नों का उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए। 10x10=100

1. दलित साहित्य के उद्‌भव एवं विकास पर एक सारगर्भित आलेख लिखिए।
2. महात्मा फुले के विचारों का भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा? स्पष्ट कीजिए।
3. हीरा डोम की कविता 'अछूत की शिकायत' के ऐतिहासिक महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
4. बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर के दलित मुक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज को किस प्रकार प्रभावित किया? स्पष्ट कीजिए।
5. डॉ. आंबेडकर के आंदोलन ने दलित साहित्य को किस प्रकार प्रभावित किया विश्लेषित कीजिए।
6. समतावादी समाज की स्थापना के निर्माण में महात्मा फुले के 'सत्यशोधक समाज' के महत्त्व पर पर प्रकाश डालिए।
7. स्वामी अछूतानन्द के सामाजिक सुधार आंदोलन पर एक निबंध लिखिए।
8. पेरीयार ई.वी. रामास्वामी नायकर के आत्मसम्मान आंदोलन की समीक्षा कीजिए।
9. दक्षिण भारत में स्त्री मुक्ति के संदर्भ में नारायण गुरू के आंदोलन का साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा स्पष्ट कीजिए।
10. दलित साहित्य के लिए अलग सौन्दर्यशास्त्र की जरूरत क्यों है? व्याख्या कीजिए।
11. दलित आंदोलन में दलित साहित्य के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।
12. दलित आलोचना परिदृश्य का मूल्यांकन कीजिए।
13. भारतीय साहित्य में दलित आत्मकथा का विशेष स्थान है। स्पष्ट कीजिए।
14. दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र के मुख्य तत्त्वों के बारे में बताइए।

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी–19
हिंदी दलित साहित्य का विकास
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–19
सत्रीय कार्यः एम.एच.डी.–19/टीएमए/ 2017–18
कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्ही दो की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।
10X2=20

क) चाहे संकीर्ण कहो या पूर्वाग्रही
मैं जिस टीस को बरसों बरस
सहता रहा हूँ
अपनी त्वचा पर
सूई की चुभन जैसे,
उसका स्वाद एक बार चखकर देखो
हिल जायेगा पाँव तले जमीन का टुकड़ा।

ख) दूसरा सच
वह देखना नहीं चाहती
घर से गया हुआ उसका मर्द
अब कभी वापस लौटकर नहीं आएगा
सच यही है।
घर से गए
उसके आदमी की आँतें
किसी रामपुरिया चाकू से कटी–फटी
किसी कूड़े के ढेर के नजदीक पड़ी होंगी।
या उसका झुलसा चेहरा
और जला हुआ शरीर
किसी नहर/नदी/नाले के पास पड़ा होगा
सच यही है।

ग) यदि धर्मसूत्रों में लिखा होता
तुम ब्राह्मणों, ठाकुरों और वैश्यों के लिए
विद्या, वेद–पाठ और यज्ञ निषिद्ध हैं।
यदि तुम सुन लो वेद का एक भी शब्द
ते कानों में डाल दिया जाय पिघला शीशा।
यदि वेद–विद्या पढ़ने की करो धृष्टता,
तो काट दी जाय तुम्हारी जिह्वा
यदि यज्ञ करने का करो दुस्साहस,
ते छीन ली जाय तुम्हारी धन–सम्पत्ति
या, कत्ल कर दिया जाय तुम्हें उसी स्थान पर।
तब, तुम्हारी निष्ठा क्या होती?

घ) देवताओं और देशभक्त के
अर्ध्यों में, कारखाने बेचकर
पैदा की गई बेरोजगारी के
यज्ञ को कहते हैं जो 'नई क्रान्ति'
नाशपीटों की यह धोखेबाज सेना
इतना भी नहीं जानती
कि मेरिडियन होटलों की बगल से
गुजरने वाली कोई भी सड़क
'जनपथ' नहीं हो सकती
जनपथ तो उन्हें बनाना है
जिनके हाथ में '50–साल'
आज़ादी के बाद भी
तख्तियाँ दिया जाना शेष है।।

ङ) हाँ–हाँ मैं पुजारी बनना चाहता हूं
देव–दर्शन के लिए नहीं
पूजन–अर्चन के लिए नहीं कि –
देव–मूर्ति के सानिध्य में रहकर
एक मानव कैसे बन जाता है
पाषाण–हृदय अमानव?
अपने भोग की सामग्री जोड़ने
जन की श्रद्धा को अपनी ओर मोड़ने
वह धर्म का स्वांग कैसे सजाता है?
सरल का दोहन करने
निर्बल का शोषण करने
कैसे–कैसे कुचक्र चलाता है?

2. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10x2=20

क) "तभी तो यह हाय–तौबा मची है। कोई छोटे–बड़े का भेद नहीं। पहले इन ससुरों की परछाई से भी दूर रहा जाता था। अलग खाना, अलग पीना। अब तो छोटे ठाकुर, सुना है शहरों के होटलों में एक ही कप में सभी चाय पीवै हैं। कितना बड़ा अन्याय, सारा धरम ही चौपट हो गया।"

ख) वह कहती "दुसाधों–चमारों के संग रोज़ उठते–बैठते हों, तुम्हारा जूठा बर्तन न धोऊंगी। क्या मिल जाता है वहाँ, अपनी बिरादरी के नहीं हैं क्या? हमसे ज्यादा दिमगर हैं वे? कल को ऐसा होगा कि बिरादरी के लोग नाराज़ होकर बिरादरी से काट देंगे और पत्तल पानी बंद। दो–दो बेटियाँ है वर ढूँढ़ने निकलेंगे तो यही ताना सुनने को मिलेगा कि तुम तो दुसाध–चमार हो गए, उनके साथ उठते–बैठते हो, उनकी बातें करते हो तो ब्याहों उन्हीं के बाल–बच्चों से अपनी बेटियाँ।"

ग) "मर–मरकर घर तैयार करो पर हरामज़ादे थोड़े दिन भी चैन नहीं लेने देते। फेंको–फेंकों सामान बाहर निकालो! मकान 'एलॉउटमेंट' हो गया।"

घ) "बापू रोओ मत, जब तक हीरा की जान में जान है, वह अपनी बहिन की बेइज्ज़ती का बदला लेकर रहेगा।" जमना को बड़ा साहस मिला, वह अपने भाई से बलात्कारियों (सुमेर सिंह और उसके चाचा नत्थू सिंह) की सारी करतूतें बताती है। साथ ही अपने बच निकलने की बात बताती है कि नशे में दोनों बेसुध थे तभी वह भाग पायी, अन्यथा उसका बचना तक मुश्किल था।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में लिखिए: 10x4=40

क) दलित साहित्य आंदोलन की पृष्ठभूमि पर एक आलेख लिखिए।

ख) समकालीन दलित कविता पर एक निबंध लिखिए।

ग) **'आज का रैदास'** कविता के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

घ) दलित लोककथा और दलित कहानी में क्या अंतरसंबंध है? विश्लेषण कीजिए।

ड़) दलित आत्मकथन एवं सामान्य वर्ग के लेखकों के आत्मकथन का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए।

च) **'जूठन'** आत्मकथन के संरचनागत वैशिष्टय पर एक निबंध लिखिए।

छ) अपने–अपने पिंजरे के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए। 10x2=20

क) **'अभिलाषा'** कविता के उद्देश्य पर टिप्पणी लिखिए।

ख) **'हीराडोम'** की कविता का ऐतिहासिक महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

ग) **'आमने–सामने'** कहानी की संरचना-शिल्प पर टिप्पणी लिखिए।

घ) दलित स्त्री लेखक के वैशिष्ट पर प्रकाश डालिए।

ङ) **'जूठन'** आत्मकथन के पात्रों पर टिप्पणी लिखिए।

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–20
भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–20 / टीएमए / 2017–18
कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 10x4= 40

क) तुझे देखा मैंने
भीड़ भरी सड़क पर टोकरी संभालते
फटे आँचल में खुद को लपेटे
बुरी नजरों को धमकाते
भरे चौंक में हाथ में चप्पलें लिए
तुझे देखा मैंने
आँखों में चार दीवारों का सपना लिए
बहुमंजिला इमारतों की सीढ़ियों पर
गर्भ भार को संभाल पैर ढोती

ख) युगों से पढ़ाई से दूर
होस्टल की गोद के करीब होने पर
वहाँ भी
वार्डन की भूखी नजरें झेल नहीं सकने के कारण
तन को मुट्ठी में लेकर
लगा कि दूर फेंक दूं

ग) घोड़ा नहीं जानता कि
वह पैरों से खोद सकता है धरती
दुलत्तियों से तोड़ सकता है
सवार का चेहरा
चबा सकता है चाबुक को
नरम हाथों सहित
तोड़ सकता है लगाम
गिरा सकता है
पीठ पर पड़ी काठी को
कुचल सकता है
सदियों से सवार देह को
पर, घोड़ा तो अभी घोड़ा है
पंगु का पंगु है
न समझता है, न सोचता है
बस, अपने आप को ही नोचता है

घ) तू? और तू? और वह? और वह?
तू मुआ ढेड ओर वह नासपीटा चमार
तू मुआ तूरी और वह नासपीटा ओलगणा
तू मुआ ढेड खिस्ता और वह नासपीटा तीरगर
तुम्हारे अकारण के झगड़ों से मैं तंग आ गई
तुमने तो अपने बाबा का नाम डुबो दिया
और मेरा दूध लजाया

भूल गए कल तक सबके गले में लटकती थी मेलिया मटकी
और पीछे लटकता था झाड़ू?
कल तक सब मुर्दार खाते थे
और आज मुछल्ले मरद बन गए?

2. निम्नलिखित में से चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। 10x4=40

क) मराठी दलित साहित्य संबंधी बाबूराव बागूल की अवधारणा का उल्लेख कीजिए।

ख) ''**बुद्ध ही मरा पड़ा है**'' कहानी के आधार पर दलित समाज के राजनीतिक अन्तर्विरोध को बताइए।

ग) ''**उम्मीद अब भी बाकी है**'' कहानी के आधार पर दलित स्त्री के संघर्ष पर अपने विचार लिखिए।

घ) ''**मोची की गंगा**'' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

ङ) '**बिच्छु कहानी**'' में वर्णित दलित जीवन की व्यथा को स्पष्ट कीजिए।

च) 'अक्करमाशी' आत्मकथन के आधार पर लेखक के मानसिक अंतर्द्वंद्व पर अपने विचार लिखिए।

छ) दलित स्त्री आत्मकथन में **बेबीताई कांवले** के योगदान की समीक्षा कीजिए।

ज) **मशालची** उपन्यास के आधार पर पंजाबी दलित साहित्य में डॉ. गुरूचरण सिंह राओ के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

झ) **'अस्पृश्य बसंत'** उपन्यास के आधार पर यह स्पष्ट कीजिए कि इसमें धर्म परिवर्तन के कौन–कौन से कारण को बताया गया हैं।

3. निम्नलिखित में से चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए। 5x4=20

1) **'गौरेया'** कविता में व्यक्त स्त्री वेदन, का स्वरूप

2) '**आज का एकलव्य'** कविता का उद्देश्य

3) व्यथा कविता में धार्मिक आस्थाओं पर कवि का विचार

4) अमावस कहानी का वातावरण।

5) **रोटलें की नजर लग गई**' कहानी में व्यक्त बालमनोविज्ञान का चित्रण

6) **'जीवन हमारा**' में वर्णित दलित स्त्री का तिहरा शोषण की व्याख्या कीजिए।

7) '**अस्पृश्य बसंत'** अपन्यास में रामानुजम का चरित्र

8) **मशालची** उपन्यास की भाषा।